कथा खंड

शन्नो का फ़ैसला

भाभी जब भी कहती, "स्पर्श से मैली होती हो ननंद जी, कोई कामदेव ही खोजना होगा," तो शन्नो के चंपई गालो पर सैकड़ो गुलाब झर पड़ते और सच ही एक दिन गोरे अंगों वाले सुदर्शन युवक से उसका विवाह हो गया था। दिन पंख लगा कर उड़ने लगे। हर पल एक खुमारी में डूबी रहती शन्नो। उसकी दुनिया आकाश तक सिमट गई थी। दोनों एक-दूसरे के पूरक! दो दिन के लिए पीहर जाती, तो भावजें हँसती, "पल्लू से बंधे चले आते हैं, दो दिन के लिए भी जुदा नहीं हो सकते बहनोई जी।"

शन्नो भाव-विभोर हो उठती। उसके हाथ जुड़ जाते, "हे भगवान, सब सुरक्षित रखना।"

भाभियों का हक था सो मजाक कर लेती, पर उसने कभी यह नहीं जाना था कि मां और भाभी दो अलग रिश्ते होते हैं। बड़ी भाभी ब्याह कर जब इस घर में आई, तो उनकी गोद में फूफी सास ने दो साल की इस शन्नो को बिठाते हुए कहा था, "लो बहू आज से इसे अपनी ननंद नहीं बेटी समझ कर छाती से लगाना। बड़ी अभागिन है जन्म लेते ही इसकी माँ चल बसी। तब से यहां-वहां पलती रही। फूल सी बच्ची क्या जाने माँ का प्यार?" भाभी ने जैसे फूफी की बात गांठ बांध ली थी।

आसक्ति की हद तक चाहत और पत्नी की हैसियत से पूरा मान-सम्मान मिला था उसे पति से। आकाश की सुबह शन्नो के जागने से और रात उसके पलक झपकने से होती थी। आकाश इंजीनियर है दिन-रात मेहनत करके अपनी काबिलियत के बल पर खूब नाम और पैसा कमा लिया है। अभी उम्र ही क्या है, पर महत्वाकांक्षाएं आकाश छू लेने को मचल पड़ती है। एक दिन लाड़ में आकर कहने लगे, "बहुत जल्द शन्नो रानी यह फ्लैट छोड़कर बड़ी कोठी में जाने वाली है।"

"बड़ी कोठी?" वह चौंकी थी, "यह बड़ी कोठी का ख्याल कैसे? हम दो के लिए यह फ्लैट कुछ कम है क्या?"

"कम ही तो है। दो ही रहेंगे क्या? और फिर खूबसूरत शन्नो के लिए बाग-बगीचे वाला एक खूबसूरत बंगला भी तो होना चाहिए ना।"

ऐसे ही अवसरों पर आकाश की उस चाहत को मैं अपने अंदर के खास कोने में छुपा लिया करती और खुद चंचल नौका सी इधर-उधर डोलने लगती।

फिर एकाएक ऐसा क्या हो गया कि उसके शबनमी आंगन की नरम धूप को अकस्मात घिर आई घटाएँ निगल गई और उसे आभास तक नहीं हो सका। सारा सच झूठ में कैसे बदल गया? प्यार की नींव इतनी कमजोर कैसे हो गई कि पुख्ता इमारत एकाएक हिलने लगी?

छह महीने में नई कोठी बनकर तैयार हो गई थी। गृहप्रवेश हुआ, मेहमानों से कोठी के वास्तुशिल्प की प्रशंसा सुनकर आकाश गदगद हो रहे थे।

दूर के रिश्तों की किसी बहन का ट्रांसफर साल भर पहले मुंबई में हुआ था। वे सब और जयपुर से शन्नो के भाई-भावज और बच्चे सभी आए थे। बरसों बाद उसके घर में ऐसी हलचल हुई थी। स्वर्ग के वैभव की बातें उसने पुस्तकों में पढ़ी जरूर थी, पर यहां तो सब कुछ जैसे आंखों की समक्ष था। हवनकुंड से उठती हुई धूप की सुगंध से संपूर्ण परिवेश सुवासित हो रहा था। एक कमरे से दूसरे और दूसरे से तीसरे में आ-जा जाकर आकाश बंगला दिखा रहे थे। ड्राइव वे के फर्श का यह पत्थर आगरा से मंगवाया है, लकड़ी हिमाचल से और मार्बल अयोध्या से कि तभी दूर की वह बहन हाथ घुमा कर बोली, "किसके लिए यह सब तामझाम है भैया, घर में बच्चे हो, तो सब अच्छा लगता है।"

"बच्चे भी होंगे, वक्त आने दो।"

"लो! और सुनो इनकी, बारह साल हो गए अभी वक्त ही नहीं आया।"

"बारह साल? लगता है अभी कल की ही तो सहरा बाँधा था।"

उस दिन वह चली गई, पर महीने दो महीने के अंतराल पर उसके चक्कर लगने लगे। बात में से बात उठाने वाली चतुर स्त्रियों के मन की थाह विधाता भी नहीं ले सका, तो साधारण मनुष्य की तो बिसात ही क्या?

छुट्टी के दिन किसी बहाने कभी बच्चों को उनके यहां छोड़ देती, तो कभी दोनों मियां-बीवी, "इधर से गुजर रहे थे सोचा मिलते चले," के बहाने जब-तब आने लगे। आकाश को उनके बच्चों के साथ खेलने में ऐसा रस आने लगा कि जरूरी काम छोड़कर कभी उनके लिए टॉफी और चॉकलेट लेने से बाजार दौड़ पड़ते, तो कभी कपड़ों की परवाह किए बिना उसके लिए घोड़ा बन जाते। उसके जाने के बाद अक्सर कहते, "बच्चे से घर जन्नत हो जाता है।"

"सो तो है," शन्नो बुदबुदाती। दोनों में से किसी ने भी इस विषय को कभी गंभीरता से नहीं लिया था। पर पिछले एक वर्ष से सैकड़ों तरह के टेस्ट, दाइयों, डॉक्टरों से सलाह-मशविरा, जिसने जो कहा, जहां भी जाने की सलाह दी, सब कुछ किया... और फिर यह पता चल गया कि बच्चे होने की संभावना नहीं है। दौड़ में हारे हुए प्रत्याशी की भांति आकाश मायूस हो गए थे।

उन्हें तो यह एहसास अब हुआ था, पर शन्नो को तो विवाह के चार-पांच वर्ष बाद ही चिंता व्यापने लगी थी। पर मौज मस्ती के आलम में आकाश को कुछ सुनने की फुर्सत ही कहां थी। अब एकाएक पति की आंखों में उतरती उदासीनता और उनकी बाहों की पकड़ में जो ठंडापन वह देख रही थी, उससे वह दोहरी टूटने लगी थी। कुछ खोजती सी शन्नो की भयभीत आंखें जब-तब बादलों से भर-भर आती, पर उन आंसुओं की आवाज सुनने वाला तो उससे कुछ दूर सा होने लगा था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी थी। उसका हृदय उसे सांत्वना देता... वह स्वयं भी तो उसी नाव में सवार है, जिसमें उसका आकाश है। मिलकर खेह लेंगे। एक-दूसरे का दर्द बांट लेंगे। फिर और भी तो बहुत से रास्ते हैं...जिसे छाती से लगा लो, जिगर का टुकड़ा हो जाता है।

आकाश उसके साथ है, तो उसे और क्या चाहिए? पर क्या सचमुच आकाश उसके साथ है?

दूर के रिश्ते की यह बहन कोई खेल खेल रही है, इसका कुछ आभास उसके तिरिया चरित्र से शन्नो को हुआ तो था, किंतु आकाश की चाहत पर भरोसा न करने का अर्थ था खुद पर भरोसा ना रखना। वह सिर झटक कर फिर कहती... आकाश उसके साथ है बस! उसे और क्या चाहिए? और बस यह भरोसा ही उसे छलता रहा। वह जान नहीं सकती थी कि हरा-भरा दिखने वाला यह वृक्ष भीतर ही भीतर सूखने लगा है। घर के स्वामी का हक लेकर पैदा होता है पुरुष... स्वामिनी और अर्धांगिनी तो स्त्री भी बनती है, पर अनचाही स्थितियां पैदा नहीं हुई कि पद और अधिकार हमेशा उसी के छिनते रहे हैं।

जी बड़ी कोठी को घर बनाने में उसका एक-एक पल बीत रहा था, उस घर से उसका इतना ही संबंध जुड़ सका था? किस घर पर नाज करती है स्त्री? कोई घर उसका होता भी है? घर तो पुरुष का होता है। वह तो झूठे ही एक भ्रम पाल लेती है और फिर उस भ्रम को हकीकत बनाने में पूरा जीवन डरते-डरते काट देती है।

शन्नो के साथ भी तो यही हुआ था। उस दिन की एक-एक बात स्फटिक शिला में दिखते अक्स की तरह उसके सम्मुख तैरती रहती है। उसी दिन तो वह इस अलिखित भाग की लिपि से रूबरू हुई थी। पूरे सुकून, ठंडक की वह एक गुलाबी सुबह थी। रक्षाबन्धन आने में अभी तीन-चार दिन बाकी थे। डॉक्टरी पैसे से थोड़ा सा वक्त चुरा कर शन्नो के भाई परिवार सहित इस दिन बहन-बहनोई के घर आते थे।

"क्यों ना इस बार रक्षाबन्धन भैया के यहां मनाएं?" आकाश ने कहा था।

"नेकी और पूछ-पूछ! इससे अच्छा और क्या हो सकता है।" फौरन शन्नो ने चलने की तैयारी शुरू कर दी थी, "फोन मत करना, सबको सरप्राइस देंगे?"

कार में कुछ गड़बड़ी आ रही थी। दोनों दोपहर की ट्रेन से चले गए। कुछ घण्टों बाद जयपुर आ गया।

थोड़े बहुत यात्री उतरे थे। तांगे और रिक्शावालों ने यात्रियों को घेरा। कहीं टैक्सी ना देख शन्नो को एक तांगे में बैठाकर और सूटकेस रखवा कर आकाश बोला, " बच्चों के लिए तो कुछ लाए ही नहीं। फल, मिठाई तो ले लें। ऐसा करो तुम चलो, मैं मार्केट से होकर पहुंचता हूं, दूर ही कितना है?" और तांगेवाला शन्नो को लेकर आगे बढ़ गया।

भाई का क्लीनिक घर से सटा हुआ है। हमेशा की तरह मरीजों की भीड़ थी। चारों तरफ नाम है, लंदन में पढ़ा हुआ है। कस्बेवालों के लिए यह बहुत बड़ा बात है। पैसा और शोहरत विरासत में मिले हैं।

भतीजा बाहर खेल रहा था। बुआ को आई देखकर अंदर भागा और उसके साथ भाई-भावज बाहर निकल आए। नौकर ने दौड़कर सूटकेस थामा। भाभी ने आगे बढ़कर शन्नो को गले लगाया। भैया ने तांगेवाले को रुपए दिए।

"अरे ना कोई फोन ना खबर, अकेले कैसे? आकाश कहां है? नहीं आए क्या?"

"मिठाई और फल खरीदते हुए आ रहे हैं साले साहब के लिए।"

"अरे! उसकी क्या जरूरत थी शन्नो, कहां उतरे थे, गाड़ी भेज दूं।" भाई ने ड्राइवर को आवाज दी।

"रहने दो भैया, आते ही होंगे। एक दिन रिक्शा या तांगे में ही सही।"

भाभी ने चाय का पानी चढ़ा दिया था और नाश्ते के सामान से मेज सज गई थी।

"शन्नो बेटी, हाथ मुंह धो लो बहनोई जी भी आते ही होंगे।"

बातचीत में आधा-पौन घन्टा बीतने को हुआ था। भाई क्लीनिक से उठकर आए,

"आकाश अभी तक नहीं आए। लक्ष्मण जा देख तो कहां रह गए।"

"जगतगुरु की दुकान तक जाने की बात हुई थी।" शन्नो के चेहरे पर चिंता की रेखाएं उभरीं।

लगभग आधा घन्टा बाद लक्ष्मण अकेला लौटा था।

"दामाद साहब तो वहां दिखाई नहीं दिए।"

"तूने ठीक से देखा तो था?"

"हां भैया, एक ही तो सीधा बाजार है देखता ही आ रहा हूं।"

"बीस-पच्चीस साल पुराना नौकर है, उससे गलती नहीं हो सकती।" वे खुद स्कूटर उठाकर निकल गए।

जगतगुरु ने बताया कि दामाद साहब तो दुकान पर आए ही नहीं। सारा कस्बा छान मारा। सबकी सांस ऊपर की ऊपर, नीचे के नीचे, सौ-सौ ख्याला। पैसे वाले हैं, कहीं किसी ने कोई शरारत तो नहीं की।

मुंबई फोन पर फोन मिलाए, कोई उठा ही नहीं रहा था। शन्नो ने बगल के वर्मा साहब का नंबर दिया। दो-तीन बार करने पर नौकर ने फोन उठाया और पूछने पर बताया कि अभी दस मिनट पहले आकाश टैक्सी से उतरते दिखाई दिए थे। रात हो रही थी। तुरंत घर फोन मिलाया, तो नौकर ने बताया कि सब सो रहे हैं। बिना देर लगाए शन्नो के भाई मुंबई रवाना हो गए।

दूसरे दिन सुबह दस बजे के करीब लौटकर उन्होंने जो बताया था उसे सुनकर सबको जैसे लकवा मार गया था। "आकाश दूसरा विवाह करेगा। कहता है कि उसने बहुत सोच समझकर यह निर्णय लिया है। उसे बच्चों की जरूरत है, जो शन्नो पूरी नहीं कर सकती। शन्नो से उसे कोई शिकायत नहीं है। उसके साथ रहना चाहे, तो उसे कोई एतराज भी नहीं है, लेकिन दूसरा विवाह हो जाने के पश्चात अब आप लोग जैसा उचित समझे करे।" अंतिम बात कहते हुए भाई ने शन्नो की तरफ देखा।

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता... यह झूठ है... मजाक किया है उन्होंने...!" और शन्नो दरवाजे की तरफ लपकी थी।

"कहां जा रही हो?"

"मुंबई।"

"ऐसे कैसे मुंबई जाओगी, पागल हो गई हो क्या। यहां आओ," और भाई ने खींचकर उसे अपने पास बिठाया।

"मजाक नहीं है, यह सच है। दो घंटे उससे मेरी बात होती रही, पर कोई नतीजा नहीं निकला। फल-मिठाई खरीदने वाली बात भी झूठी थी। दरअसल वह तुम्हें यहां तक छोड़ने आया था। रिश्ते की जो बहन है, उसने अपनी चाची की लड़की से उसके विवाह की बात पक्की भी कर दी है। तुम्हारे वहां रहते हुए विवाह में अड़चन थी। आर्य समाज मंदिर में विवाह होगा।" भाई की बात पूरी होने से पहले ही शन्नो मूर्छित हो गई थी।

उपचार होने पर कुछ देर बाद आंख खुली, तो उसने भाभी को अपने सिरहाने बैठे देखा। शायद इंजेक्शन दिया गया था, जिसकी वजह से हाथ दुख रहा था।

कुछ तलाशती हुई भाभी की नजरें शन्नो के चेहरे पर स्थिर थीं। कोई किसी से क्या कहें? मन नहीं मानता। पर अगर यह सच है, तो पल भर में क्या से क्या हो गया था, पहाड़ से सीधा खाई में।

महीनों तो उसने इस भ्रम में काट दिए थे कि सच कुछ और है... फिर पूरा सच गले के नीचे उतारने के लिए उसने कितना जहर पिया था। ख्वाहिशों के चलते आत्मीय संबंध कितने बेमानी हो जाते हैं? इतना प्रपंच करने की क्या जरूरत थी? हाथ पकड़ कर घर से बाहर कर दिया होता, तो भी वह क्या कर लेती? शायद इतने बेगैरत नहीं हो सके होंगे। अपनी नजर में कुटिल आदमी भी कुछ साफ दिल बना रहना चाहता है, नहीं तो मन का बोझ कैसे हटे?

शन्नो का मन नहीं माना। भाई ने उसका मन रखने के लिए ही एक दो बार मुंबई जाकर आकाश को समझाने की कोशिश भी की थी कि बच्चा गोद लिया जा सकता है। जन्म होते ही दिलवा दूंगा... कौन जाने फिर अपना हो जाए... ऐसे बहुत से केस हुए हैं... पर सब तर्क और कोशिशें नाकाम हुई थीं। रिश्ते की बहन ने बहुत सारा रंग चढ़ा दिया था। कहते हैं रिश्ते जीवन को संपन्न करते हैं, उसे अर्थ देते हैं... जरूर देते होंगे... पर अर्थपूर्ण रिश्ते बनाना जैसे हर पल पहाड़ पर चढ़ने जैसा है और टूटना छोटी से कंकड़ से चूर-चूर हो जाने वाले कांच के उस आईने की तरह है जो टूटकर ऐसा

बिखर जाता है कि बटोरने के लिए एक जिंदगी कम पड़ जाती है। शन्नो का जो अपमान हुआ था सो हुआ था, भाई भी कम अपमानित नहीं हुए थे। उसका रुतबा और अहं दूर तक आहत हुए थे। अनायास इस सारे घटनाक्रम का सूत्र उन्होंने अपने हाथों में थाम लिया और तब शुरू हुआ एक दूसरा सिलसिला।

आकाश की ओर से डाइवोर्स का दबाव पड़ रहा था। साल भर इसी उधेड़बुन में बीत गया और एक दिन शन्नो ने डाइवोर्स के पेपर पर साइन करा कर उसके भाई ने आकाश के मुंह पर दे मारे थे।

और फिर... दो बच्चे वाले एक विधुर डॉक्टर के साथ शन्नो की दूसरी शादी की बात चलाई गई।

"वह समझता क्या है अपने को... मैंने भी उससे पहले शन्नो का विवाह करके ना दिखाया तो मेरा नाम नरेंद्र नहीं?"

शन्नो के हृदय और दिमाग को धो-पोंछकर वहां भावी पति के रूप में किसी एक विधुर डॉक्टर युवक की तस्वीर चस्पान करने की जिम्मेदारी भाभी ने ओढ़ी थी।

"अट्टाइस की उम्र ही क्या होती है? आजकल तो इस उम्र में लड़कियों का विवाह होता है। वह तो जल्दी विवाह हो गया था इसका, तो इतनी सी उम्र में यह दुख आन पड़ा वर्ना... राज करेगी हमारी शन्नो रानी, तकदीर की अच्छी है, जो तुरंत की तुरंत ऐसा योग्य वर मिल गया।"

यह सब शन्नो की उपस्थिति में कहा गया था, लेकिन उसने भाभी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया।

भाभी ने सोचा ऐसी जल्दी भी क्या है! वक्त गुजरने के साथ सब ठीक हो जाएगा। लेकिन वक्त गुजरता गया। शन्नो की तरफ से कोई जवाब न पाकर एक दिन भाभी ने चिंतित होकर कहा,

"शन्नो बेटी क्या कहती हो, तुम्हारे हित को देखते हुए हमने यह कदम उठाया है। उसके बच्चों को एक माँ मिल जाएगी और तुम्हें तुम्हारा एक घर। हम आज है कल नहीं। जमाना अकेली औरत को इज्जत से जीने नहीं देता।"

वह जानती थी कि भाई-भाभी का यह अतिरिक्त प्यार है, जो उन्हें इतना संवेदनशील बना रहा है। पर यह दुलार उसे इतना कमजोर भी कर रहा था कि अपनी जिंदगी के फैसले करने का अधिकार भी उससे छीन रहा था।

मंजिल पर पहुंचने से पहले ही राहों ने उसे पीछे धकेल दिया था। उसे लगा था कि उसका भविष्य उलझे हुए धागों की तरह हो गया है कि सिरा दूँढते-दूँढते सैकड़ों गांठें पड़ती जा रही है। बहुत कहने पर भी उसने इस नए रिश्ते के लिए हामी नहीं भरी थी।

आखिर भाभी ने चांदनी को बुलावा भेजा था। वह बीमार मां को देखने आई थी। शन्नो की यह खबर सुनी, तो उसे विश्वास नहीं हुआ। दोनों बचपन की सहेलियां थीं। तभी भाभी का बुलावा भी आ पहुंचा। उन्होंने सभी बातें चांदनी के सामने रखी और कहा, "अब तू ही समझा इसे। इतना योग्य पर मिल रहा है कि जैसे इसी के लिए बना हो... जाने क्या पढ़ने की बात कह रही है, इतना ही आसान है क्या?"

आज भी याद है चांदनी को, विवाह तो हो ही गया था शन्नो का, पर बीए का फॉर्म भरने के लिए उसने उसे कितना समझाया था। उस समय शन्नो ने यह कहकर कि जो पाने के लिए पढ़ा लिखा जाता है वह तो मिल गया, बात हवा में उड़ा दी थी।

"भाभी ने जिस लिए मुझे बुलाया है, क्या सोचा उसके विषय में?"

शन्नो चुप थी।

"भाई-भाभी दोनों तुम्हारे हित की बात ही तो कह रहे हैं।"

"पता नहीं मेरा हित किसमें है? जो हुआ वह इस तरह होगा, और अब कल क्या होगा.. कुछ भी मेरे बस में नहीं है। तू ही बता क्या करूं?"

"बस में तो शन्नो किसी के भी कुछ नहीं है। जो घट जाता है, हमें तो उसे मान लेने भर का अधिकार है। मैं तो तुम्हारे सामने हूँ।"

दो वर्ष पहले चांदनी के पति की मृत्यु एक एक्सीडेंट में हो गई थी। वह तो कहो कि चांदनी तो पहले से ही सर्विस में थी। पति के असमय देहांत से उपजा दर्द परिवार की जिम्मेदारियों में दब कर रह गया और अब परिवार ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य...

"तू किस सोच में पड़ गई चांदनी?"

"कुछ नहीं.. बीते हुए समय की दुखद बातें पीड़ा दे जाती है।"

शन्नो ने उसके कंधे पर हाथ रखा था।

"क्यों अपने को दुखी करती है रे! कम से कम तुम्हारी जिंदगी किसी मकसद के लिए तो पिस रही है। वह मकसद दो कदम आगे बढ़ने की हिम्मत तो देता है। मेरी नियति तो पहाड़ी ढलान के लुढ़कने जैसी निरुद्धेश्य हो गई है। खाई के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता।"

"क्यों! फूलों की घाटियां भी तो आंचल पसारे खड़ी है।"

"और कांटे? वे भी तो कहीं होंगे। इस रास्ते मुझे जाना ही नहीं है। एक सम्मानित जीवन जीने की लालसा में हमेशा स्त्री ही क्यों अटकती आई है? कुछ अनचाहा हुआ नहीं कि रिश्ते के रंग उसकी चूनर से बादलों से उड़ जाते हैं। दोष आकाश का होता, तो क्या मैं उससे इस तरह नाता तोड़ लेती? ममत्व की सबसे ज्यादा जरूरत तो स्त्री को ही होती है, पर वह तो पुरुष के दोष को भी अपने सर ओढ़ कर उसकी छांव बने रहना स्वीकार कर लेती है। ऐसा नहीं हो सका, तो अब दूसरा कुंठित जीवन जीने की मजबूरी क्यों स्वीकार करूं?"

"लेकिन शन्नो, जीने का कोई मकसद तो होना चाहिए ना! तुम जैसी लड़की जरूर निभा लेगी।"

"नहीं चांदनी, रिश्ते निभाए या ढोए नहीं जाते। रिश्ते को जिया जाता है। ढोए या निभाए जाने की स्थिति में वे धड़कना बंद कर देते हैं और नासूर बन जाते हैं। किसी ताकतवर पेड़ की छाया तलाशते रहना जरूरी है क्या? खुद भी तो पेड़ बना जा सकता है। आकाश को बच्चे की जरूरत है, मेरी नहीं। डॉक्टर के पास दो बच्चे हैं, उसे उनके

लिए एक मां की जरूरत है... रिश्तो के ऐसे दायरों में बहुत सी मजबूर शन्नो खड़ी होती आई है, पर यह शन्नो अब सिर्फ एक जरूरत भर नहीं बन सकती।"

चांदनी हैरान थी। यह दब्बू और शर्मीली लड़की एकाएक इतनी निर्भीक कैसे हो गई है। कुछ तो है जो उसे लीक पर चलने से हठात रोक रहा है। एक आहत मन इतना स्वाभिमानी भी हो सकता है, जो भविष्य को इतनी कड़ी चुनौती दे डाले?

खामोश हो गए लम्हों को चांदनी ने जबान दी, "हकीकत और जज्बात में बहुत दूर का रिश्ता होता है शन्नो... फिर भी तूने जो सोचा है, उसमें यह चांदनी तेरे साथ है।"

उसका यह निश्चय देखकर भाई-भाभी ने इतना ही कहा था, "अगर तेरा यही फैसला है, तो तेरे खाने-पहनने से यहां के कुएं नहीं खाली हो जाने वाले। तेरा भाई तुझे जीवन भर राजकुमारी की तरह रख सकता है। शन्नो के दुख ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया था। वे उसे खुश देखना चाहते थे।

पल भर के लिए शन्नो कुछ नहीं कह सकी। उनकी भावना को ठेस पहुंचाने से पहले वह मर जाएगी। फिर साहस बटोर कर उसने कहा था, "मैं कितनी नसीबवाली हूं कि मुझे आप मिले। पर भैया-भाभी जिंदगी के थोड़े से हिस्से के बारे में सोचने का अधिकार मुझे भी दे दो। मुझे आपका सहारा नहीं, साथ चाहिए।"

जवाब में दोनों ने उसके कंधे थपथपाकर भरे हृदय से कमरे के बाहर चले गए। इससे पहले कि उसके भविष्य की किताब का पहला पन्ना गलने लगे, रलमल करती हुई आंखों को शन्नो ने हथेलियां से पोंछ डाला था।

सम्पर्क- पूजा गुप्ता

भगवानदास की गली

आदर्श स्कूल के सामने

गणेश गंज, मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश), पिन कोड - 231001

फोन नंबर - 7007224126

ईमेल - guptaabhinandan57@gmail.com